
Padyamaya Adarsha Sanskritavakyani

पद्यमय आदर्श संस्कृतवाक्यानि

Document Information

Text title : Padyamaya Adarsha Sanskritavakyani

File name : padyamayaAdarshasanskRRitavAkyAni.itx

Category : misc, sanskritgeet

Location : doc_z_misc_general

Author : Vasudev Dwivedi Shastri

Proofread by : Mandar Mali

Description/comments : Sanskrita Prachara Pustaka Mala Sangraha 37

Acknowledge-Permission: Uttara Pradesha Sarvabhauma Sanskrit Prachar Karyalaya

Latest update : May 19, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

May 19, 2024

sanskritdocuments.org

पद्यमय आदर्श संस्कृतवाक्यानि




संस्कृत की सभाओं एवं शिक्षासंस्थाओं में पोस्टर के
रूप में लगाने योग्य तथा संस्कृत-सभाओं की
शोभायात्रा में उद्घोष वाक्य के रूप में कलने योग्य
दो-दो पंक्तियों के कुछ छोटे-छोटे पद्य -
संस्कृत-गौरव-गानम्
देश-जाति-उत्थानम् । १
देव-वाणी ही हमारे देश का सम्मान है,
देव-वाणी ही हमारे राष्ट्र का अभिमान है । २
संस्कृत भाषा वह गंगा की पावन निर्मल धारा,
जिसके स्पर्शमात्र से होता ज़ुवन धन्य हमारा । ३
संस्कृत पढःिये । आगे बढ़ःिये । ४
संस्कृत भाषा का अभ्यास ।
करता बौद्धिक-शक्ति-विकास । ५
जब घर-घर संस्कृत-प्रचार हो ।
तब सबका उत्तम विचार हो । ६
भारत की सांस्कृतिक राष्ट्रभाषा है संस्कृत ।
भारतीय ऐकत्व-साधिका आशा संस्कृत । ७
भारतीय संस्कृति का संस्कृत मेरुदण्ड है ।
भारतीयता की रक्षा का गढः प्रयाण्ड है । ८
संस्कृत है सब से आसान ।
दो दिन में बस इसका ज्ञान । ९
सुरभारती का अज्ञान ही सबसे बडःा दौर्भाग्य है ।
सुरभारती-ज्ञान ही सबसे बडःा सौभाग्य है । १०
संस्कृत हमारी भारती,
इसकी उतारें आरती । ११

जब तऒ ःषिवाणी का ढ्किर से धर-धर में संयार न ढोगा ।
 तऒ तऒ ढारत का निश्चित ढी ःषिःरुण से उढ्दार न ढोगा । १२
 संस्कृत रऒा । संस्कृति रऒा । १३
 संस्कृत ढाषा पठनम् । देश जाति संगठनम् । १ॡ
 संस्कृत ढाषा अति कठोर ढै ।
 यऒ कऒना अऒ्ञान धोर ढै । १५
 अब ढी तो संस्कृत शिक्षा पर ध्यान ढीऒिये ।
 ढसकी रऒाढेतु आप कुऒ काम कीऒिये । १ॢ
 ऒिनको ढारत और यऒाँ की संस्कृत का ढै कुऒ ढी ढान ।
 उनको संस्कृत की रऒा पर ढेना ढै आवश्यक ध्यान । १ॣ
 ढिन्ढी के विढ्दान ढढारे जब संस्कृति के ऒ्ञाता ढोंगे,
 तढी वस्तुतः वे ढिन्ढी के ढी सौढाऒ्य-विधाता ढोंगे । १।
 ढारतीय सब ढाषाओं का तऒ तऒ ऒ्ञान अधूरा ढोगा,
 पाठकऒाण को संकृत का ढी जब तऒ ऒ्ञान न पूरा ढोगा । १॥
 संस्कृत की उन्रति में निश्चित ढारत का उत्ऒर्ष,
 संस्कृत की अवनति में निश्चित ढारत का अपऒर्ष । २०
 ढातार्ये, ढऒने, कन्यार्ये ढी अब संस्कृत पढःे प्रेम से,
 कम से कम गीता का ढी तो पाठ करे कुऒ नित्य नेढ से । २१
 ऒुवन के अन्तिढ ऒाण में ढी तो संस्कृत कुऒ आप ऒान ले । २२
 ढिना संस्कृत पढःे कोढ नऒी विढ्दान ढो सकता ।
 ढिना ढसके कऒी पर ढी नऒी सढ्ढान ढो सकता । २३
 संस्कृत ऒन्थों में ऒो अऒ्कृत ऒुवन के आढर्श,
 उनसे ढी निश्चित ढो सकता ढानव का उत्ऒर्ष । २ॡ
 ऒिसने ऒिया न अरुऒा अर्ऒित संस्कृत का ढै ऒ्ञान,
 वऒ अपने को कऒ सकता ऒया ढाषा का विढ्दान ? । २५

- रयथिता - श्री. वासुढेव ढ्विवेढी शास्त्री

Proofread by Mandar Mali

pdf was typeset on May 19, 2024

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

